दुआ दो दुआ लो

ब्र0 कु०शीलू

आज की दुनिया में धन कमाने की बहुत होड़ लगी है। हर एक व्यक्ति धन कमाने के पीछे लगा हुआ है। मनुष्य आज धन से मापा जा रहा है। आज धन किसी के पास होता है उसे उतना ही बड़ा आदमी समझ जाता है। वास्तव में बहुत आधिक धन कमाने की लालसा में मनुष्य बड़ा तो क्या और ही छोटा बनता जाता है क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि धन कमाने के लिए मनुष्य सच्चे कर्म नहीं करता, पुण्य के कर्म नहीं करता, दुआएँ प्राप्त नहीं करता बल्कि बददुआएँ प्राप्त करके, दु:ख देकर, दूसरों को कष्ट देकर धन उसे सुख नहीं देता है। तो सच्चा धन उसे सुख नहीं देता है। तो सच्चा धन किसे कहेंगे ? सच्चा धन उसे माना जाएगा जो आत्मा के साथ जाए। वास्तव में सबसे बड़ा धन है दुआओं का धन।

दुआ धन से भी आधिक मूल्यवान

जीवन में दुआएँ प्राप्त करना बहुत बड़े धन की प्राप्ति करना है। दुआ उस चेक के समान है जो समस्या के समय भुनाया (encash) जा सकता है। यदि आपके सामने ऐसी विकट परिस्थिति आ जाए जबकि आपको धन की तीव्र आवश्यकता हो उस समय कोई आपकी धन द्वारा मदद कर दे तो आप उसका कितना शुक्रिया मानेंगे। इसी प्रकार दुआ वह धन है जिसकी मदद और शक्ति का अनुभव किसी संकटमयी परिस्थिति के समय होता है। हम कह सकते हैं कि दुआ वह बल है जो समस्या वाली परिस्थिति के समय हमें मदद करता है। वैसे कोई व्यक्ति अगर हमें सहयोग देता है तो वह मित्र तो वह होता है जो विपरीत परिस्थिति के समय काम आए। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में अनेकों की दुआएँ प्राप्त की हैं वह व्यक्ति जीवन में कभी धोखा नहीं खा सकता, कभी भी दु:खी नहीं हो सकता। वास्तव में दुआ धन से भी आधिक मूल्यवान है। स्थूल धन तो चोर लूट लेंगे, आग जला देगे, अन्त में वह नष्ट हो जाएगा लेकिन दुआएँ ऐसा धन है जिसको पाने के बाद आपको डरने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि दुआओं का धन कोई लूट नहीं सकता, न आग जला सकती क्योंकि वह धन आत्मा के भीतर समा जाता है।

जिसने अपने जीवन में दुआओं का धन कमाया, वह व्यक्ति बहुत मालामाल है, वही सच्चा धनवान है। इस जन्म में भी वह धनवान है तथा अनेक जन्मों के लिए भी दुआओं का धन अपने साथ ले जाता है फलस्वरूप हर जन्म में वह धनवान बन जाता है। वह हर कदम पर दुआओं का बल अपने अन्दर अनुभव करता है। किंन्तु दुआ कमाना इतना सहज नहीं है। धन कमाना तो फिर भी सहज है, आप जहाँ भी जाओ धन कमा सकते हो। धन तो हाथों का मैल है, धन आएगा तो चला भी जाएगा, आज आया और कल चला गया। लेकिन दुआ रूपी धन कमाना इतना सहज नहीं है और एक बार यदि यह धन आ जाए तो

यह सहज जाता भी नहीं है। यह है दुआओं रूपी धन का मूल्य। हमें सदैव दुआएँ लेने और देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

वास्तव में दुआ देना तो सहज है परन्तु दुआ लेना इतना सहज नहीं है। आप मन से किसी को दुआ करो, आप मालिक हो दुआ करते समय, लेकिन दुआ लेने के लिए स्वयं को इसके योग्य बनाना पड़ेगा क्योंकि दुआ दिल से निकलती है, माँगने से नहीं मिलती है। कुछ लोग दुआ माँगते हैं, कहेंगे बस हमें दुआ करो, हमें आशीर्वाद करो, हमारे सिर पर हाथ रखो तो हमें दुआ मिल जाए, हम ठीक हो जाएं, लेकिन क्या सिर पर हाथ रखने से दुआ मिल जाती है? क्या केवल मुख से कहने से आशीर्वाद हो जाती है? दुआ सदैव दिल से निकालती है। मान लीजिए हम अस्वस्थ हैं और किसी को कहते हैं कि आप हमें दुआ करो हम स्वस्थ हो जाएं, आप डॉक्टर को कहते हो, डॉक्टर साहब हमें दुआ करो हम ठीक हो जाएं। तो डॉक्टर कहेगा कि दवा तो मैं दूंगा, दुआ भी कर लूंगा कि आप स्वस्थ हो जाओ पर दवा तो आपको ही लेनी पड़ेगी, समय पर लेनी होगी और जिस प्रकार का भोजन हम कहें उसी प्रकार का भोजन आपको लेना होगा। तो दवा देना भी सहज है और दुआ मुख से वर्णन करना भी सहज है लेकिन दुआ प्राप्त करने के लिए इतनी योग्यता चाहिए।

श्रेष्ठ कर्मों से दुआओं की प्राप्ति

दुआ मांगने से नहीं मिलेगी लेकिन श्रेष्ठ कर्म करने से, आज्ञाकारी बनने से मिलती है। दुआ किसी से भी ली जा सकती है। ऐसा नहीं है कि हमें केवल बड़ों से ही दुआ मिलती है या हमें केवल भगवान से ही दुआ मिलती है बल्कि हमें अपने छोटों से भी दुआ मिल सकती है। यदि किसी व्यक्ति की आवश्यकता के समय हमने मदद की, चाहे वह व्यक्ति हमसे छोटा ही क्यों न हो परन्तु उसको मदद करने पर स्वत: ही उनके दिल से हमारे लिए दुआएँ निकलेंगी। तो दिल की दुआएँ उस समय निकलती हैं, जब हम आवश्यकता के समय किसी को सहयोग देते हैं। जो दिल से किसी की सेवा करते हैं उन्हें दिल की दुआएँ अवश्य प्राप्त होती हैं। अगर कोई व्यक्ति केवल मान के पीछे, इज्ज़त के पीछे, मर्तवे के पीछे या केवल महिमा के पीछे ही सेवा करता है तो दिल की दुआएँ प्राप्त नहीं कर सकता। अगर किसी को दिल की दुआएँ प्राप्त करनी हैं तो दिल से सेवा करने की आवश्यकता है। दिल से सेवा करना अर्थात् नि:स्वार्थ सेवा करना। कोई भी इच्छा रख करके हम सेवा करेंगे तो वह नि:स्वार्थ सेवा नहीं कहलाई जाएगी और दिल की दुआएँ प्राप्त नहीं हो सकेंगी क्योंकि हमारे अन्दर के संकल्प दूसरों तक पहुंचते हैं। यह कभी नही सोचे कि मै जो सोच रहा हूँ वह दूसरों को क्या पता पड़ेगा। कि मै क्या सोच रहा हूँ। लेकिन याद रखीये आपका संकल्प बहुत सूक्ष्म चीज है ये सहज ही मन से मन तक पहुच सकते हैं। इसलिए दूसरों से दिल की दुवायें प्राप्त करने के लिए नि:स्वार्थ भाव से समय पर और बिना किसी प्रतिफल की इच्छा करनी होगी।

बडों की दुवायें तो सदा हम छोटों पर है ही हर पात-पिता अपने बच्चों पर दुवा करते ही है लेकिन माँ बाप की दिल से दुवायें तब निकलेगी जब बच्चा आज्ञाकारी होगा। मात-पिता बच्चों के सदा शुभचिन्त होते है, सदा कल्याणकारी होते हैं, कोई मात-पिता अपने बच्चों के अकल्याण नही चाहते है किसी भी मात-पिता से पूछे आप इतना धन किसके लिए कमाते हों तो वे कहेंगे कि अपने बच्चों के लिए कमाते हैं।

बच्चों के लिए केवल धन ही नही परनतु मात-पिता अपना सर्वस्व उन पर कुर्बान कर देते हैं लेकिन बच्चे भी ऐसे योग्य होने चाहिए जो मात-पिता के दुवाओं के पात्र बन सके तो हम अवश्य आज्ञाकारी बनना होगा आजकल के युवक सोचते है कि मात-पिता को क्या मालूम वे पुराने जमाने के हैं, वे तो बीती बातों को ही जानते हैं वर्तमान युग तो बदल गया है अब तो रॉकेट युग है, स्पेस युग है, साइन्स युग है, कम्प्यूटर युग है मात-पिता तो इन बातों को जानते ही नही है मात-पिता की समझ को वे तुच्क्ष मानते हैं और फलस्वरूप आज्ञाओं को उलंघन करते है, अवज्ञा करते हैं। लेकिन बच्चो को यह जरूर समझना चाहिये कि मात-पिता के आज्ञाओ का उलंघन है क्योकि मात-पिता ने हमे जन्म दिया है तो हमेशा माता-पिता के आज्ञा का पालन करना अर्थात दुवायें प्राप्त करना।

ईश्वर से दुवायें कैसे लें ?

जैसे छोटों की दुवायें मिल सकती है बड़ों की दुवायें मिल सकती है एसे ही ईश्वर की दुवायें भी मिल सकती है। ईश्वर की दुवायें प्राप्त करने के लिए हमे बहुत दूर दृष्टि रखनी होगी, विशाल बुद्धि रखनी होगी जो आत्मायें आपके सामने आये उन्हे क्षमा भी करना होगा क्योकि ये भगवान का विशेष गुण है जो भगवान के गुण हैं उन्हे अगर हम अपने अन्दर धारण करेगे तो भगवान से भी हम दुवायें ले सकेंगे। परमात्मा हमसे चाहते हैं कि मेरे बच्चे मेरे जैसे बनें जैसे लौकिक में हर मात-पिता चाहते है हमारे बच्चे हमारे जैसे ही नहीं बल्कि हमसे ऊंच बने। इसी प्रकार परमात्मा जो सर्वोच्च है सर्वशक्तिमान है, सर्वोपरि है, सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द के सागर है , दया के सागर है उस परमात्मा के समान बनना ही परमात्मा से दुवायें प्राप्त करना है।

ईश्वर का सबसे महान् गुण है क्षमा करना यह बहुत महान् गुण है जिसको धारण करने से हम सहज ही दुवाये प्राप्त कर सकते हैं। वैसे दुआ प्राप्त करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, योग्य बनो, आज्ञाकारी बनो किन्तु क्षमा करने के लिए कोई मेहनत नहीं चाहिए सिर्फ विशाल हृदय की आवश्यकता है। आज के इस वातावरण में हम देखते है कि मनुष्य शिक्षा तो बहुत सहज ही दूसरों को दे देता है लेकिन क्षमा नहीं कर सकता। वास्तव में शिक्षा देना कोई बड़ी बात नहीं है, शिक्षा लेना बड़ी बात है। शिक्षा हम सबसे ले सकते हैं जड़ और चेतन, दोनों से हम शिक्षा ले सकते हैं और अगर हम गहराई से सोचें, तो शिक्षा लेना भी दुआ लेना है। मान लीजिए कोई आप पर क्रोध कर रहा है, यह आपके सामने एक परिस्थिति आ गई पर अगर आप चाहें तो उस परिस्थिति से भी दुआ ले सकते हैं। हम जड़ वस्तुओं को देखते हैं, एक गुलाब का फूल कैसे गन्दी मिट्टी, बदबू वाली खाद से भी सुगन्ध लेता है, काँटों के बीच में रहते भी सदा खिला रहता है। जब गुलाब के फूल में भी इतनी विशेषता है कि दुर्गन्ध से सुगन्ध लेता है तो क्या हम विकट परिस्थितियों से शिक्षा नहीं ले सकते ? क्या हम उनसे दुआ प्राप्त नहीं कर सकते ? वास्तव में अगर कोई व्यक्ति मुझ पर क्रोध कर रहा है तो वह मुझे शिक्षा दे रहा है कि भाई मैं तो कमज़ोर हूँ क्योंकि मैं क्रोधी हूँ लेकिन तुम तो सर्वशक्तिमान् के बच्चे हो इसलिए तुम शक्तिवान हो, यह क्रोधी हमें याद दिलाता है। अगर कोई व्यक्ति मुझे याद दिलाये कि तुम शक्तिवान हो, यह तो दुआ देना हुआ। हमें शिक्षा देनी ही नहीं है बल्कि शिक्षा लेनी भी है। हम समझाते हैं कि क्रोध करना हानिकारक है, यह तो हुआ

शिक्षा देना। लेकिन चाहे क्रोधी हो या कोई विकट परिस्थिति हो उससे भी शिक्षा ले लो। मान लीजिए आप नदी में या सागर में नहाने जा रहे हैं, आप सागर को ये नहीं कहोगे कि हे सागर मुझ पर इतनी ज़ोर से लहरे मत फेंको, छोटी लहरें ही आएं, टेढ़ी लहरे नहीं आएं, सीधी लहरें ही आएं, ये आप सागर को नहीं कह सकते हो। आपको स्वयं को ही लहरों के अनुरूप समायोजन करना होगा। अपने आपको सुरक्षित करना होगा ना कि सागर को आप रुकने के लिए कहेंगे। इसी प्रकार परिस्थितियों को आप रोक नहीं सकते हो लेकिन परिस्थितियों से आप शिक्षा अधिक देते है। फलस्वरूप वह दुआओं का पात्र नहीं बनता। शिक्षा देने वाला पहले ये भी सोचे कि जब मैं दूसरों को शिक्षा दे रहा हूँ तो क्या उस समय मैं खुद को भी शिक्षा दे रहा हूँ? जैसे किसी को हम शिक्षा दे रहे हैं कि क्रोध मत करो, क्या उस समय मैं स्वयं को भी शिक्षा दे रहा हूँ कि मुझे भी क्रोध नहीं करना चाहिए। क्योंकि अगर मैं दूसरे को शिक्षा देते समय स्वयं भी क्रोधित हो रहा हूँ और दूसरे को कह रहा हूँ कि तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिए तो उस समय पहले हम स्वयं को शिक्षा दें कि मैंने कितना क्रोध को जीता है? मैं अगर शान्त रहूँ, मैं क्रोध से बचा रहूँ और अपनी शीतलता से मैं दूसरी आत्मा को क्षमा करूँ और उनसे प्रेरणा ले लूँ कि ये आत्मा तो कमज़ोर है लेकिन मैं सर्वशक्तिमान परमात्मा की सन्तान शक्ति रूप हूँ, यह शिक्षा ले लूँ, तो यह हुआ क्रोधी से भी दुआ प्राप्त करना। उस विपरीत परिस्थिति में भी हम सहन करके, क्षमाशील बनकर अपने आपको स्थिर बना सकते हैं।

दुआ देने की प्रतिज्ञा करें

दुआ लेना और देना ये दोंनो हमारा साथ-साथ चलना चाहिए। दुआ देने के लिए सवेरे-सवेरे अपने आपसे प्रतिज्ञा करो की आज मुझे सारे दिन में दुआएँ देने का कार्य करना है। क्या कर सकते हैं आप? मन से दुआएँ दो, वचन से दुआ देने के लिए सदा वाणी द्वारा शुभ और शुद्ध वचन बोलें। कोई भी अशुभ या अशुद्ध वचन मुख से न निकले, यह है दुआ देना और जितना आप शुभ वचन मुख से उच्चरण करोगे उतना ही आपका मन और वाणी भी शुद्ध और शुभ हो जाएगी। इससे दूसरों के संकल्पों को भी आप शुद्ध और शुभ बना सकेंगे। आप सदा यह सोचें कि जो भी मैं संकल्प करूँगा या वचन बोलूंगा, ये अनेक आत्माओं को या तो प्रेरित कर उत्थान करेंगे या फिर अनेकों को गिरने के निमित्त बन जायेंगे। संकल्प करने के समय बुद्धि में यह सोचो कि हमारा लक्ष्य है दुआ देना, दूसरा मुझे कुछ भी दे, चाहे मुझे बद्दुआ दें, चाहे मेरी ग्लानी करें, कुछ भी करें, मुझे दुआ ही देनी है।

आज इन्सान भगवान को कितनी गालियाँ देता हैं लेकिन भगवान ऐसे को भी दुआ देता है। आप घबराईये मत! लेग कहेंगे यह तो साधू बन गया, ये किसकी बातों में आ गया, कैसी सन्यासियों जैसी बातें करता है। किन्तु आप उस समय सोचें कि नहीं, मुझे तो भगवान का सुपात्र बनना है, मुझे दुआ देनी है। लोग आपको बहुत कुछ कहेंगे। अगर आप अच्छा कार्य करेंगे तो भी लोग आपको कहेंगे, आप बुरा कार्य करेंगे तो भी लोग आपको कहेंगे। दुनिया तो आपको छोड़ने वाली नहीं है क्योंकि मनुष्य इन्तजार करता है कि ये व्यक्ति कब गिरे और मैं ताली बजाऊँ, ये व्यक्ति कब दु:खी हो और मैं उसका आनन्द लूँ। अर्थात् दूसरे के आधार पर मनुष्य स्वयं में सुख और शान्ति का अनुभव करना चाहता है। हम दूसरे के कहने पर

चलेंगे तो शायद हम धोखा भी खा सकते हैं लेकिन आपकी आत्मा जो स्वीकार करे उसको आप महत्व दें। जो आपकी शुद्ध आत्मा, शुद्ध बुद्धि, सदबुंद्धि कहे उस अनुसार आप कार्य करें तो आपकी सद्बुद्धि धारण करते हुए श्रेष्ठ कर्म करो। केवल सबके कहने पर नहीं चलो। इस सम्बन्ध में एक कहानी हैं कि एक पिता और पुत्र अपने गधे को लेकर नदी पार कर रहे थे। पिता ने बच्चे को गधे पर बिठा दिया और स्वयं पैदल चलने लगा, इस पर लोगों ने कहा ये बच्चा कैसा है जो स्वयं तो गधे पर बैठा है और पिता बेचारा पैदल चल रहा है। तो पिता गधे पर बैठ गया और बच्चे को नीचे उतार दिया। इस पर भी लोगों ने कहा कि यह व्यक्ति कैसा है जो खुद तो मौज कर रहा है और बच्चा बेचारा पैदल चल रहा है। उन्होंने सोचा कि अब क्या किया जाए, तो फिर दोनों गधे पर बैठ गये। इस पर भी लोग कहने लगे कि कैसे लोग हैं ये जो बेचारे गधे पर दो व्यक्तियों का बोझ ढो रहे हैं। अब वे दोनों नीचे उतर गये और गधे को साथ ले चलने लगे। इस पर भी लोग कहने लगे कि ये कैसे मूर्ख हैं, देखो गधा खाली जा रहा है और दोनों पैदल चल रहे हैं। अब पिता और बच्चे दोनों ने मिलकर गधे को सिर पर उठा लिया। जैसे ही गधा सिर पर बैठा तो उसने ज़ोर से छीक मारी और गधा जाकर नदी में गिर गया। और डूब गया। यह होता है सबकी बात सुनने का परिणाम। वास्तव में वही कार्य करना चाहिए जिसे आपका सद्विवेक, सद् बुद्धि स्वीकार करे। सच्ची दिल से सबको दुआएँ दें, योग्य बनें और ईश्वर की दुआएँ प्राप्त करने के साथ-साथ दुंनिया की भी दुआएँ प्राप्त करें, सबके दिलों को जीतें। जिससे आप यहाँ भी राजा बनोगे और भविष्य में भी राजाई संस्कार धारण करके आप श्रेष्ठ आत्मा, विश्व के मालिक बन सकते हो। यही हम आपसे दुआ करते हैं और हमें उम्मीद है कि इस दुआ के आधार पर आप आपने जीवन केा अवश्य श्रेष्ठ बनायेंगे।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com